पाक्षिक

तहसील प्रेस

रजि.नं. 324449/2018

ग्रामीण पत्रकारिता को नई दिशा देने के लिए समर्पित

प्रधान संपादक : प्रकाश जैन, अदावन | प्रबंध संपादक : एड. देव सांधेलिया | संपादक : मनीष शास्त्री विद्यार्थी

वर्ष - 7 अंक - 4 | नवम्बर 2024 | पृष्ठ : 08

प्रतिभा सम्मान समारोह एवं पत्रकार सम्मेलन का बारहवाँ वर्ष

पत्रकारिता सामाजिक जीवन की वह कड़ी है जिसे हम तोड़ नहीं सकते, अगर आप पत्रकारिता के प्रश्नों के उत्तर चाहते है तो ग्रामीण पत्रकारिता की ओर ध्यान दें क्योंकि ? तहसील प्रेस क्लब, मध्यप्रदेश का उद्देश्य भी ग्रामीण पत्रकारों को सही दिशा देना है। जब 2010 में तहसील प्रेस क्लब की स्थापना की थी तब हमने एवं हमारे पत्रकार बंधुओं की यही विचार धारा थी कि हम भारतीय संस्कृति, सामाजिक एवं सोशल कार्यों को प्राथमिकता के साथ जन जागरूकता के लिए कलम चलायेगें। तहसील प्रेस क्लबने 2012 से 2000 से ज्यादा प्रतिभाओं का सम्मान एवं 100 से ज्यादा उपाधियां एवं नशा मुक्ति, पालीथिन हटाओ, पटाखों से जागरूकता अभियान पोस्टर के माध्यम से जागरूकता लाने का कार्य किया। 2012में जब प्रथम बार शास. उत्कृष्ट विद्यालय के रविन्द्र भवन से प्रथम आयोजन किया तब मेरा मन बहुत आनंदित हुआ कि हमने जन आयोजन बिना भेदभाव के किया, बच्चों में खुशी थी क्योंकि जिनका कहीं नाम भी नहीं आता था सम्मान में हमने इस मंच से उनका सम्मान किया। अगले वर्ष से बच्चों के फोन आना, सर कार्यक्रम कब होगा, तब हमें लगा कि यह आयोजन हमेशा होना चाहिए। हमारे अध्यक्ष प्रकाश अदावन पत्रकार एवं कोषाध्यक्ष एड. देव सांधेलिया ने हमें सहयोग किया। भूपेन्द्र नामदेव ने भी हमें सहयोग कर कार्यक्रम की सफलता में सहभागी बनें।

प्रतिभा सम्मान समारोह को सफलता के शिखर पर भेजने की महत्वपूर्ण भूमिका प्राचार्य पं. अशोक तिवारी जी जो इस आयोजन के निर्देशक है एवं हमारे क्लब का उत्साहवर्धन कर हमें मजबूती प्रदान करते है। साथ ही वर्ष 2012 से भारतीय स्टेट बैंक शाहगढ़, डॉ. अमित असाटी, भूपेन्द्र सादपुर, कमला मेडम आदि का सहयोग मिलता रहा है। आज बारह वर्ष इस आयोजन के लिये हो गये है तहसील प्रेस क्लब ने समाज सेवियों, पत्रकारों एवं प्रतिभाओं के सम्मान के साथ डॉ. कृष्णा राव डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय सागर केसहयोग से छात्र-छात्राओं को मार्गदर्शन का कार्य भी किया गया। आज यह नगर का सर्ववर्गीय सफल आयोजन बना। इसके हम सभी हृदय से आभारी है।

प्रेरणा स्रोत
आचार्य देवनंदी जी महाराज

12वॉ प्रतिभा सम्मान समारोह एवं ज्ञानोदय प्रेस अवार्ड

कैरियर काउंसलिंग, पत्रकार सम्मेलन एवं बुन्देली उत्सव 2024

18 नवम्बर 2024 सोमवार दोपहर 12 बजे से

स्थान - **नगर भवन तालाब मैदान, शाहगढ़**

प्रायोजक- स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय, सागर

भारतीय स्टेट बैंक शाखा-शाहगढ़

डॉ. अजय तिवारी
कुलाधिपति एस.व्ही.एन. सागर

समारोह में पधारे समस्त राजनेता पत्रकार बंधु, शिक्षकगण, समाजसेवी, छात्र-छात्राओं का हार्दिक अभिनंदन करते है।

आयोजक- तहसील प्रेस क्लब मध्यप्रदेश रजि.

संपादकीय

पत्रकार और पत्रकारिकता

-मनीष विद्यार्थी
शाहगढ़

पत्रकार वह है जो लोगों की समस्याओं को शासन तक भेजने का एक माध्यम। वर्तमान में हो रहे कार्यो को सही सुचारू रूप से हो इसके लिए अपनी कलम से लोगों का जागृत करने का कार्य करना पत्रकार के कार्य है। आधुनिक समय ने पत्रकारिता की परिभाषा को बदल दिया है। लोग पत्रकार इसलिए बनना चाहते है कि हमारे कार्य सुलभता से हो सके। अगर पत्रकार को प्रश्न करना आता तो वह लोगों की समस्याओं को शासन तक भेज सकता है, इसके लिए सबूत होना, जन सामान्य का समर्थन होना पक्ष-विपक्ष की जानकारी लेना और स्वयं का सुरक्षा हो इसके लिए भी सतर्क रहना यह पत्रकार और पत्रकारिता की परिभाषा है। पत्रकार समाज की दिशा बढ़ने का कार्य करता है राष्ट्र पिता महात्मा गांधी ने भी एक अखबार निकालते थे। स्वतंत्रता संग्राम की लड़ाई के समय कई क्रांतिकारियों ने समाचार पत्र निकाले और लोगों को जागृत किया लेकिन उस समय सरकार के विपक्ष में लिखने की स्वतंत्रता नहीं थी और पत्रकारों को जेलों की हवा खानी पड़ती थी। आज पत्रकारिता को चौथा स्तंभ कहते है। पत्रकार स्वतंत्र रूप से लिखने का बोलने का अधिकार रखता है। आज भी कई देशों में पत्रकारों की सरकार के विपक्ष में लिखने का अधिकार नहीं है। पत्रकारों को पत्रकार और पत्रकारिता की परिभाषा के अनुरूप कार्य कर सफल पत्रकार बनने का प्रयास करना चाहिए एक विचारधारा को लेकर समस्याओं के निराकरण के लिए जन समस्याओं के लिए पत्रकारिता करनी चाहिए। अपने लेखन, एक्टिंग, कर्मठता, निष्पक्षता से सफल पत्रकार बनें, ऐसा हमारा लक्ष्य होना चाहिए।

सामायिक अपील

- सेठ दामोदर जैन

शाहगढ़ के वरिष्ठ नागरिक एवं इतिहासविद दामोदर जैन ने एक अपील द्वारा शाहगढ़ की क्षेत्रीय जनता और शासन से मांग की है कि यह वर्ष अनेकों महत्वपूर्ण प्रसंगों का संयोग लेकर आया है। इस वर्ष हम अवश्य कुछ मंथन करें। (1) यह वर्ष हमारे गणतंत्र का 75वाँ वर्ष है - अर्थात् संविधान लागू होने के 75 वर्ष होने जा रहे हैं। संविधान को लागू होते समय 26 जनवरी 1950 में जन्म लेने वाला शिशु आज 75 वर्ष का हो चुका है पर अनेकों अधिकारों को प्राप्त करने के बाद भी उसे आर्थिक न्याय के रूप में रोजगार पाने का मौलिक अधिकार नहीं मिल सका है। अतः आर्थिक नीतियों को रोजगार मूलक बनाते हुए संविधान के इस अमृत के उपलक्ष्य में रोजगार को मौलिक अधिकार का दर्जा देकर बेरोजगारी खत्म करने का दिशा में एक सुखद संदेश देश को मिलना चाहिये। (2) भगवान पार्श्वनाथ जैन जगत के सर्वाधिक मान्यता प्राप्त आराध्य हैं। ई.पू. 777 में उनका निर्वाण हुआ, उनकी उम्र 100 वर्ष थी। अतः उनके जन्म को 2023-24 में 2900 वर्ष और निर्वाण को 2800 वर्ष हो चुके हैं। इस महान अवसर पर उनके जन्म स्थान बनारस में भगवान पार्श्वनाथ संस्कृति विश्वविद्यालय और झारखण्ड के निर्वाण के 2900 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में मधुवन में भगवान पार्श्वनाथ जोहार विश्वविद्यालय स्थापित हो जहां आदिवासी एवं सराक समाज को पूरी शिक्षा निःशुल्क प्राप्त हो। मधुवन झारखण्ड है जो आदिवासी बहुल राज्य है और जोहार उनकी परम्परागत अभिवादन शैली है। श्रद्धेय राष्ट्रपति जी श्री महामहिम मुर्मू जी ने राष्ट्रपति पद की शपथ के समय सम्पूर्ण राष्ट्र का अभिवादन जोहार कहके किया था। (3) सन् 1873 के 29 सितम्बर को शाहगढ़ के महाराजा वोखुडका बखतवली जी ने वृन्दावन में नजरबंदी की हालत में मृत्यु का वरण किया था। वे 15 वर्ष तक लाहौर, दिल्ली, वृन्दावन में नजरबंद रहे। उनके साथ हजारों लोगों ने अंग्रेजों से आजादी के लिए लड़ते हुए अपनी कुर्बानी दी थी। सन् 2024 में इस घटना को 150 वर्ष हो चुके हैं। अतः शहीदों की पुण्य स्मृति में क्रांतिभूमि शाहगढ़ में कैम्प वाले 570 एकड़ के मैदान में अमर शहीद महाराजा बखतवली आयुर्वेद विश्व विद्यालय की स्थापना की जावे। शाहगढ़ की आवहवा, सड़क सम्पर्क भौगोलिक स्थिति बुन्देलखण्ड के मध्य में अच्छी है। म.प्र. में अभी आयुर्वेद विश्व विद्यालय नहीं है इन तीनों मांगों को लेकर हमारे विनम्र अनुरोध पर शासन विचार करें।

प्रतिभा सम्मान समारोह एवं पत्रकार सम्मेलन

समारोह में पधारे समस्त राजनेता पत्रकार बंधु, शिक्षकगण, समाजसेवी, छात्र-छात्राओं का हार्दिक अभिनंदन करते है।

अंजली फोटो स्टूडियो, सिविल लाईन, शाहगढ़

मानद् सलाहकार संपादक
डॉ. अजय तिवारी, सागर
एस.व्ही.एन. कुलाधिपति
डॉ. कृष्णा राव, सागर
प्रो.डॉ.हरीसिंह गौर वि.वि.

प्रधान संपादक
प्रकाश जैन, अदावन

संपादक
मनीष शास्त्री विद्यार्थी

प्रबंध संपादक
एड. देव सांधेलिया

पत्र व्यवहार –
मनीष जैन विद्यार्थी,
वार्ड नं. 6 शक्तिनगर
नेहानगर, मकरोनिया
सागर (म.प्र.) 470001
मो. 9926409086
8821965778
Email ID-manish2
shastri82@gmail.com

सदस्यता शुल्क
वार्षिक- 151/- रू.
त्रिवार्षिक- 501/- रू.

तहसील प्रेस में प्रकाशित समस्त लेख, कविता का संपादक मण्डल का सहमत होना जरूरी नहीं।

अमृत वचन

उठो मेरे शेरों, इस भ्रम को मिटा को कि तुम निर्बल हो, तुम एक अमर आत्मा हो, स्वच्छंद जीव हो, धन्य हो, सनातन हो, तुम तत्व नहीं हो, न ही शरीर हो, तत्व तुम्हारा सेवक है, तुम तत्व के सेवक नहीं हों, उठो, जागो और तब तक नहीं रूको, जब तक कि लक्ष्य न प्राप्त हो जाये।

शिक्षक, विद्यार्थियों को ऐसे करें प्रशिक्षित

विद्यार्थी समाज एवं राष्ट्र निर्माण का आधार है। हमें विचार करना है कि हम परिवार, समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए किस प्रकार के विद्यार्थी तैयार करें। संस्कार बचपन से सीखे जाते हैं, बाद में नहीं। अतः विद्यार्थियों को संस्कारित एवं गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के मार्ग पर लाना है।

यह निश्चित जानें कि -

❖ प्रत्येक बालक अनंत गुणों का धारी है। ❖ हमारे व बालक के प्रयासों के द्वारा उन गुणों को उजागर किया जा सकता है। 2. हमें क्रमशः बालक के नियंत्रण का केन्द्र बिन्दु बाहर से भीतर लाना है। बालक की बातों से निष्कर्ष निकालें कि उसके नियंत्रण का केन्द्र बिन्दु कहां है। उसे प्रोत्साहित करें कि यह दायित्व लेने लगे। 3. अपने प्रयासों के द्वारा बालकों की स्वयं निर्धारित सीमाओं को जानें व उन्हें उन सीमाओं को लांघने में मदद करें। ऐसा करने के लिए कार्यशाला में बताई गई विधियों का प्रयोग करें। 4. बालकों की तरंगों को विकसित कर आत्म विकास का तरीका प्रदर्शन करके सिखलाएं व उसका अभ्यास करवाएं। उन्हें इस विधि का अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए प्रोत्साहित करें। 5. बालक की समय सारिणी बनवाने में मदद करें। ❖ उनके शारीरिक विकास हेतु कोई ठोस व्यवस्था सुनिश्चित करें, आवश्यक समझें तो इस विषय में स्कूल स्टाप से भी परामर्श करें। ❖ उनके मानसिक विकास हेतु लाइब्रेरी की पुस्तकें पढ़ने को प्रोत्साहित करें, उनसे 'ओपन एंडेड' प्रश्न करें, ग्रुप में कहानियां बनवाएं व ऐसी प्रोजेक्ट्स दें जिससे उन्हें खुद कुछ जानकारी एकत्रित करनी हो। ❖ उनके आत्म विकास हेतु आत्म विस्तार के तरीकों पर आधारित एक्टिबिटीज करवाएं व उनको मॉनीटर करें। 6. इच्छा शक्ति के विकास हेतु बालकों का अणुव्रत के सिद्धांत से अवगत कराएं। यह सुनिश्चित करें कि बालक सप्ताह में दो अणुव्रत अवश्य करें। उनके अनुभव ध्यान से सुनें। 7. बालकों के साथ अपनी भाषा का ध्यान रखें। जब बालक गलत प्रकार की भाषा का प्रयोग करें तो उन्हें समझाये कि उसी बात को किस प्रकार मधुर तरीके से कहा जा सकता था। ❖ तीक्ष्ण विशेषणों का प्रयोग न करें। जब बालक ऐसा करें तो उन्हें बतलाएं कि उसी वाक्य को किस प्रकार तीक्ष्य विशेषण के कहा जा सकता था। ❖ स्वयं निंदा सूचक शब्दों/वाक्यों का प्रयोग न करें, बालकों को भी ऐसा करने से हतोत्साहित करें। ❖ समर्थक शब्दों का प्रयोग करें। 8. कार्यशाला में बतलाए गए प्रशंसा के तरीकों का जागरूक प्रयोग करें। ध्यान रहे प्रशंसा करते समय तिल जैसे गुण को ताड़ जैसा करके बताना तो उचित है, पर असत्य प्रशंसा निश्चित रूप से हानिकारक है। 9. बालकों के प्रति आशाजनक अपेक्षाएं रखें व उन्हें भी अपने भविष्य के प्रति आशा जनक अपेक्षायें रखने को प्रोत्साहित करें। 10. बालकों की बातें सदैव ध्यान से सुनें। ❖ बालकों के भीतर ध्यान से सुनने की आदत विकसित करने के लिए कभी-कभी उन्हें 'चाइनिल व्हिस्पर' नामक खेल खिलाएं। इस खेल को दो टीमों के बीच प्रतिस्पर्धा के रूप में भी खिलाया जा सकता है। 11. अपने कार्य के भीतर। ❖ कौशलात्मक पहलू को विकसित करने की समयबद्ध योजना बनाएं, हमेशा याद रखें 'नेवर स्टॉप इम्प्रोविंग।' ❖ भावनात्मक पहलू के परिपक्व करने के लिए सदा प्रयत्नशील रहें। सतत प्रयास से सफलता प्राप्त होगी। 12. प्रदर्शन द्वारा बालकों को निम्न का प्रयोग सिखलाएं व उपयोगिता बतलाएं। ❖ श्वास तंत्र ❖ मानसिक चित्रण विजुयलाइजेशन। 13. बालकों की कविता पाठ, गायन, चित्रकला, अभिनय आदि की ओर रूचि जाग्रत करें। अवसर मिलने पर उन्हें प्रतियोगिताओं में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करें बालकों को 'हम होंगे कामयाब' अथवा 'इतनी शक्ति हमें देना दाता' नामक गीतों का सामूहिक गान के रूप में अभ्यास करवाएं। 14. बालकों को प्रत्येक 3 माह से एक बार किसी निकटतम ऐतिहासिक धार्मिक स्थल पर घुमाने ले जायें ऐसा प्रबंध करें कि उनको उस स्थल के विषय में रोचक जानकारी दी जा सके। आवश्यकता पड़ने पर स्कूल स्टाप से परामर्श करें। भ्रमण के पश्चात बालकों से कक्षा में अपने संस्मरण सुनाने को प्रोत्साहित करें।

15. बालकों की रोजाना उपस्थिति लें यदि कोई बालक अनुपस्थित हो तो उसके सहपाठियों से पता करें। लगातार तीन दिवस पर अनुपस्थित रहता है तो उसके परिवार से संपर्क करें।

एक्टिविटीज की सूची

❖ कहानी गान एवं डांस सिखलाना ❖ पेंटिंग सिखलाना ❖ कम्युनिटी सर्विस ❖ बालकों का मेडिकल चेकअप करवाना ❖ किसी विशेष विषय में आवश्यकता पड़ने पर एक्स्ट्रा कोचिंग देना (किस विषय में) ❖ बालकों को आसपास के ऐतिहासिक/धार्मिक स्थानों पर भ्रमण के लिए ले जाना ❖ बालकों के स्कूल के शिक्षकों/अभिभावकों से समय-समय पर मिलकर वांछित जानकारी प्राप्त करना। समय-समय पर बालकों को स्वास्थ्य संबंधी जानकारी उपलब्ध करवाना।

❖ योगा एवं सामान्य ज्ञान ❖ शिष्टाचार एवं बाल सभा ❖ ऐसी कोई भी एक्टिबिटी से शारीरिक, मानसिक या आत्म विश्वास में सहायक हो।

विद्यार्थी जीवन शैली

आसन - ❖ घर पर अपने पढ़ने का कोई एक स्थान निश्चित करें। ❖ इस स्थान को हम आसन कहेंगे। ❖ आसन के चयन के समय जहां तक संभव हो यह सुनिश्चित करें कि- ❖ वहां मन को विचलित करने वाली वस्तुएं जैसे रेडियो, टेलीविजन, टेलीफोन, खाने की वस्तुएं, बड़ी खिड़की, बाहरी शोर गुल व भड़कीले चित्र इत्यादि न हो। ❖ आसन स्थान साफ हो, उसकी सफाई का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लें। ❖ आसन का कोई प्रेरणाप्रद नाम रखें। ❖ आसन का सम्मान करें।

समय सारणी - ❖ ऐसी दिनचर्या बनाएं जिसमें कार्य, आराम व खेलकूद का संतुलित प्रावधान हो। ❖ दिनचर्या में निम्न का प्रावधान अति आवश्यक है। ❖ स्वास्थ्य एवं शरीर का अनुरक्षण व उसका विकास- व्यायाम, खेलकूद, व्यक्तिगत एवं परिवेश की सफाई तथा नियमित शारीरिक जांच। ❖ मानसिक सामर्थ्य का अनुरक्षण व उसका विकास- कुछ नया जानना, रचनात्मक क्रियाओं, मौलिक सोच एवं अतिरिक्त पढ़ाई में रूचि का उत्पन्न होना। ❖ आत्म विकास के स्तर का अनुरक्षण व उसका विकास-निःस्वार्थ कार्य, संबंधों का पोषण, आत्म सुझाव, आत्म निर्धारित सीमाओं से मुक्ति व विभिन्न तकनीकों के माध्यम से वांछित गुणों के रोपण द्वारा।

पढ़ाई का समय व तरीका

❖ पढ़ाई का समय परिवार जनों के परामर्श से निश्चित कर उनको व अपने मित्रों को सूचित करें। ❖ ऐसे लोगों के फोन नंबर अपने पास रखें जिनसे किसी विषय विशेष में सहायता मिल सकती है। ❖ पढ़ने बैठने से पूर्व निम्न का स्पष्ट लक्ष्य निर्धारित कर लें। ❖ कौन-कौन से टॉपिक कवर करने हैं। ❖ कितने सवाल हल करने हैं। ❖ अपने लक्ष्य अपनी क्षमता के अनुसार ही निर्धारित करें। ❖ क्षमता बढ़ने पर लक्ष्यों में परिवर्तन करें। ❖ एक समय पर एक ही टापिक करें। ❖ जब तक समझ न लें, आगे न बढ़े। ❖ पढ़े और समझें और पढ़े - आवश्यकता पड़ने पर शब्दकोश, मित्र शिक्षण या इंटरनेट की मदद लें तुरन्त समाधान न होने पर निकटतम अवसर पर समाधान कर लें।

कुछ अच्छे परामर्श : ❖ सप्ताह में दो बार अणुव्रत अवश्य करें, अपने शिक्षक से विधि समझें, अपना अनुभव शिक्षक को बताएं। ❖ सप्ताह में कम से कम तीन निःस्वार्थ कार्य अवश्य करें। ❖ सोने से पहले व प्रातः उठने के बाद आत्म प्रेरक तरंगों का प्रयोग करें, विधि शिक्षक जी से समझे। ❖ सोने से पहले ऐसी कोई पांच अच्छी बातों का स्मरण करके सोएं जो दिन में आपके साथ घटित हुई हो। ❖ अपने किसी शिक्षक के विषय में कोई तीन अच्छी बातें नोट करें व सोने से पहले उन बातों का स्मरण करके सोएं। ऐसा अपने हर शिक्षक के विषय में करें, अपने परिवारजनों के विषय में भी ऐसा कर सकते हैं।

योजनाओं का क्रियान्वयन- जब भी कोई प्लान बनाएं ❖ उसे छोटे-छोटे कार्य बिन्दुओं में परिवर्तित करें। हर कार्य बिन्दु को कार्यान्वित करने की अवधि निश्चित कर लें। ❖ डायरी के माध्यम से कार्यान्वयन की प्रगति मॉनीटर करें।

शाहगढ़- विकास की सम्भावनायें और यथार्थ - दामोदर जैन, शाहगढ़

सन् 1957 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम और बुन्देलखण्ड में इस संग्राम के महानायक शाहगढ़ नरेश वीर बुन्देला महाराजा बखतवली और उनके हजारों वीर सैनिकों के बलिदान (शहादत) के 150 वर्ष पूरे होने पर विशेष आलेख।

सागर संभाग के मध्य में स्थित तथा बुंदेलखण्ड के केन्द्र में तीस हजारा से अधिक आबादी का यह ऐतिहासिक नगर अपनी गौरवशाली परम्पराओं और महान ऐतिहासिक उपलब्धियों के कारण 'राष्ट्रीय महत्व का नगर' है। पिछले सात सौ वर्षो का इतिहास बताता है कि शाहगढ़ (प्राचीन राज्य) को गौड़ राजाओं ने मुगल आधिपत्य से अपने अधीन किया था। गौड़ राजाओं के बाद वीर बुन्देला छत्रसाल महाराज के राज्य में रहा। महाराजा छत्रसाल को हराने के लिये बादशाह औरंगजेब ने 22 वजीरों और आठ सरदारों सहित तीस हजार सैनिकों की सेना रण दूलहखां के सेनापतित्व में भेजी थी। इस विशाल मुगल सेना को शाहगढ़ की पहाड़ियों में महाराजा छत्रसाल ने पराजित कर दिया था।

महाराज छत्रसाल के बाद उनके पराक्रमी पुत्र हृदयशाह पन्ना के राजा बने, हृदय शाह के बाद उनके पुत्र सभा सिंह पन्ना को राजगद्दी पर बैठें। राजबटवारा होने से पृथ्वीसिंह को शाहगढ़ का राजा बनाया गया जो सभासिंह के भाई थे। इसके बाद पृथ्वी सिंह के पुत्र किसुनजू के कम उम्र में ही स्वर्गवासी हो जाने के कारण उनके भाई हरिसिंह शाहगढ़ के राजा हुए। हरिसिंह के शासनकाल में ही गढ़ाकोटा में अतिशय क्षेत्र पटेरिया जी में विशाल जिनालय का निर्माण हुआ। हरिसिंह के बाद मर्दनसिंह राजा बने। इन्हें गढ़ाकोटा बहुत पसंद था। गढ़ाकोटा के राजा के रूप में मर्दन सिंह का शासन बहुत प्रसिद्ध रहा है।

महाराजा मर्दन सिंह के बाद उनके पुत्र अर्जुन सिंह शाहगढ़ के राजा हुए। अर्जुन सिंह जी ने ही अपने इष्ट प्राणनाथ जी का मंदिर शाहगढ़ में बनवाया साथ ही श्री मुम्मट जी श्री बंगला जी, श्री सतगुरू मंदिर श्री महारानी जी मंदिर और रासमंडल का छोटे-छोटे रूप में शाहगढ़ में निर्माण कराया था। अर्जुन सिंह महाराज के देहावसान के बाद उनके भतीजे श्री बखतवली जी शाहगढ़ की गद्दी पर सन् 1842 में बैठे। वे 15 वर्ष तक शाहगढ़ के सफल राजा के रूप में कार्य करतेरहे और राजकाज चलाया। महाराजा बखतवली जी एक महान धार्मिक और मानवतावादी स्वतंत्रता प्रिय शासक थे। अंग्रेजों के विरूद्ध उन्होंने लगभग दस बार भीषण युद्ध किये झांसी की रानी को उन्होंने भरपूर सैनिक सहयोग किया। अंत में सन् 1858 में वे काल्पी के पास उस समय गिरफ्तार हुए जब वे झांसी की सहायता के लिये युद्ध में सहायता के लिये जा रहे थे। उन्हें अंग्रेज सरकार ने पहले लाहौर में मोरीगेट पर हकीम राय की हवेली में नजरबंद रखा, बाद में वे वृन्दावन में भी रखे गये। लाहौर में 11वर्ष से अधिक और वृन्दावन में एक वर्ष नजरबंद रहे। अंततः 29 सितम्बर 1873 को वे शहीद हो गये। आजादी के युद्ध में अंग्रेजी सेना के भारतीय सेनिकों में राष्ट्रीय भावनायें जगाने और बुंदेलखण्ड के राजाओं को एक होकर अंग्रेजों से लड़ने जैसे दूरदृष्टि सम्पन्न कार्य किये। पराजय के बाद महाराजा बखतवली के शाहगढ़ राज्य की समाप्ति की घोषणा, अंग्रेज सरकार ने की। क्यों कि महाराजा बखततवली, अंग्रेजों से युद्ध में पराजित हो गये थे। प्राचीन इतिहास के दस्तावेजों में शाहगढ़ को 1858 में जिला बनाने का प्रस्ताव आया था जिसका विवरण निम्न प्रकार है - शाहगढ़ क्षेत्र के सम्बन्ध में हेमिल्टन ने सुझाव दिया था कि इसे एक पृथक जिला बनाया जावे। लेकिन नार्थ वेस्टर्न प्राविन्सिस के लेफ्टिनेंस गर्वनर ने इसे चंदेरी, सागर और दमोह जिले में बांटने का प्रस्ताव दिया। गवर्नमेंट आफ इंडिया के गर्वनर जनरल ने इस प्रस्ताव का अनुमोदन कर दिया। इस तरह शाहगढ़ राज्य तीन हिस्सों में बांटकर चंदेरी, दमोह और सागर में मिला दिया गया। उस समय से आज तक शाहगढ़ पूरी तरह उपेक्षित है। इस भूभाग की कुछ विशिष्टतायें है जा इसे प्राकृतिक दृष्टि से, ऐतिहासिक दृष्टि से और भौगोलिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण सिद्ध करती हैं।

आज जब जंगल और जमीन की बहुत चर्चा होती है हम देखते हैं कि जल या पानी की दृष्टि से शाहगढ़ क्षेत्र, बेवस, धसान और बीला तथा लांच नदी से घिरा हुआ है अनेकों छोटे नदी नाले और तालाब यहां है। जंगल की दृष्टि से यह क्षेत्र घने जंगलों से आच्छादित है। सागौन, महुआ, अर्जुन, चिरोंजी (अचार) के वृक्षों के विशाल जंगल यहां हैं वन्यजीव भी यहां बहुतायत में हैं। जमीन की दृष्टि से यह क्षेत्र उपजाऊ तो है ही, खनिज सम्पदा से भरपूर है। ग्रेनाइट पत्थर, विविध अनाज, चावल आदि यहां होते रहे हैं। यहां के उड़द तथा घी की प्रसिद्धि दूर-दूर तक थी। यहां की मिट्टी की बनी हंड़ियां कई प्रांतों में प्रसिद्ध हैं। लगभग 100 वर्ष पहले सन् 1926 में निर्मित चंदिया बांध, मध्यप्रदेश का पहला ऐसा बांध है जो सीमेन्ट और पत्थर से निर्मित हुआ था। पर्यटन महत्व का यह क्षेत्र है। शाहगढ़ का सन् 1857 के स्वाधीनता संग्राम में योगदान तथा महामति प्राणनाथ जी के मंदिर, 175 वर्ष पुराने गुरूद्वारे आदि अनेक धार्मिक स्थल आदि ऐतिहासिक महत्व के हैं। सन्1947 में यहां पाकिस्तान से आये शरणार्थी (सिंधी भाई)बड़ी संख्या में बसाये गये थे। सन् 1942 से 1947 तक यह नगर विशाल अंग्रेजी छावनी के रूप में विख्यात था। यहां पर 570 एकड़ क्षेत्र में जहां अंग्रेज सेना का केन्द्र था वह आज भी देहाती भाषा में केम्प के नाम से विख्यात है। आजादी के आंदोलन का महान केन्द्र होने तथा अंग्रेजों के विरूद्ध किये गये भीषण युद्धों का इतिहास शाहगढ़ के इतिहास के प्रमुख अंग हैं। आजादी के संघर्ष में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के साथ बलिदानों और त्याग के लिये तथा झांसी की रानी लक्ष्मीबाई को सहयोग देने तथा 15 वर्षो तक लाहौर, दिल्ली, वृन्दावन आदि स्थानों पर यहां के महान बलिदानी महाराज श्री बखतवली की नजरबंदी का इतिहास यहां की गौरवशैली ऐतिहासिक परम्परा की कहानी कहते हैं। आज की दृष्टि से देखें तो यह स्थान बहुत महत्वपूर्ण स्थान है। ओरछा, शाहगढ़, राष्ट्रीय राजमार्ग (फोनलेन), भोपाल, लखनऊ राष्ट्रीय राजमार्ग के संगम पर यह नगर स्थित हैं। खनिज सम्पदा से भरपूर है पानी की खूब उपलब्धता है बेवस, धसान, बीला, लांच आदि नदियों से घिरा हुआ है। पर्यावरण बहुत अच्छा है, कृषि बहुल है आवहवा बहुत अच्छी है लेकिन फिर भी उपेक्षा के कारण पिछड़ा हुआ है। यहां शहीदों की स्मृति में 570 एकड़ के खाली पड़े मैदान में राष्ट्रीय, आयुर्वेद विश्वविद्यालय बनाया जा सकता है। हजारों

शहीदों के प्रति यह सार्थक श्रद्धांजलि होगी, औषधि महत्व के वृक्ष के वन लगाये जा सकते है। बुंदेलखण्ड के मध्य में स्थित, इस महान स्वाधीनता तीर्थ को जनसेवा का तीर्थ बनाने के लिये आयुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना लायक आदर्श स्थान है।अभी मध्यप्रदेश में एक भी आयुर्वेद विश्वविद्यालय नहीं है जबकि उत्तरप्रदेश, राजस्थान, केरल आदि में आयुर्वेद शिक्षा के बड़े-बड़े केन्द्र स्थापित है। राष्ट्रीय महत्व की इस ऐतिहासिक चिकित्सा पद्धति के शिक्षण का यहां केन्द्र बनाया जाना अत्यावश्यक है। पर्यावरणीय, भौगोलिक, देश के दूरस्थ अंचलों से कनेक्टिविटी (सम्पर्क) के रूप में दो महत्वपूर्ण राष्ट्रीय राजमार्गो का संगम तथा 1857 के इतिहास की अत्यंत महत्वपूर्ण घटनाओं के साक्षी होने के कारण यहां मध्यप्रदेश का आयुर्वेद विश्वविद्यालय स्थापित हो। इस हेतु 570 एकड़ का मैदान भी उपलब्ध है भरपूर जल संसाधन भी है यहां का औद्योगिकीकरण, लम्बित सिंचाई योजनाओं का क्रियान्वयन, शाहगढ़ जिला निर्माण आदि महत्वपूर्ण आवश्यकतायें हैं। जो बुन्देलखण्ड के त्वरित विकास के लिये आवश्यक है। आशा है महाराजा बखतवली और शाहगढ़ के हजारों क्रांतिवीरों के त्याग और बलिदान का महत्व स्वीकार करते हुए शासन यहां के प्राकृतिक सुरम्य और अनुकूल वातावरण तथा सभी अनुकूलताओं को देखते हुए महाराज बखतवली की पुण्य स्मृति में अमर शहीद महाराज बखतवली आयुर्वेद विश्वविद्यालय की स्थापना शाहगढ़ में की जावे तथा भौगोलिक क्षेत्रीय तथा जनसुविधा और प्रशासनिक व्यवस्था सुगम बनाने के लिये शाहगढ़ को जिला भी अवश्य बनाया जावे। शाहगढ़ क्षेत्र में प्राप्त खनिजों के आधार पर उद्योग तथा कृषि प्रसंस्करण के बड़े उद्योगों की स्थापना भी की जावे।

मेरी भावना अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी सफलता पूर्वक सम्पन्न कृतियों का हुआ विमोचन

जीवन शास्त्र है मेरी भावना - मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज -डॉ. सुनील जैन संचय, ललितपुर

लखनऊ। परम पूज्य आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से परम पूज्य मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज, मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सआदतगंज लखनऊ में अमृतोद्भव पावसयोग लखनऊ के तत्वावधान में डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत के निर्देशन व डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर के संयोजकत्व में 19 व 20 अक्तूबर 2024 को दो दिवसीय 'मेरी...मेरी भावना' अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी का आयोजन सफलतापूर्वक किया गया। जिसमें देश के मूर्धन्य मनीषी विद्वानों ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। 19 अक्टूबर 2024 को प्रातः 8 बजे से संगोष्ठी के उदघाटन सत्र में समागत विद्वानों ने आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के चित्र का अनावरण व दीप प्रज्ज्वलन किया इसके बाद पाद प्रक्षालन व शास्त्र भेंट किया गया। संगोष्ठी में दो दिन में चार सत्र आयोजित हुए जिसमें 18 विद्वानों ने अपने महत्वपूर्ण आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी में डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत (अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद), डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, (अधिष्ठाता श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर, जयपुर), प्रोफेसर श्रीयांस सिंघई जयपुर (राष्ट्रीय संस्कृत विश्विद्यालय जयपुर सेवानिवृत्त प्रोफेसर), ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत टीकमगढ़ (महामंत्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद), प्रो. अशोक कुमार जैन वाराणसी (अध्यक्ष-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद), प्रो. अभय कुमार जी जैन लखनऊ (उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश शोध संस्थान लखनऊ), पंडित विनोद जैन रजवांस (उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद), ब्र. डॉ.अनिल जैन (प्राचार्य आचार्य संस्कृत महाविद्यालय सांगानेर जयपुर), डॉ. विमल जैन जयपुर, प्रो अनेकांत जैन दिल्ली (लाल बहादुर संस्कृत विश्विद्यालय दिल्ली), पंडित पवन जैन दीवान सागर (उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद), डॉ.सुनील जैन संचय ललितपुर (संगोष्ठी संयोजक), राजेन्द्र जैन महावीर सनावद (सह संपादक जैन गजट), डॉ. पंकज जैन इंदौर (कार्यकारणी सदस्य शास्त्री परिषद-विद्वत् परिषद), डॉ.आनंद जैन वाराणसी (सहायक आचार्य काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी), डॉ. सोनल कुमार जैन (संयुक्तमंत्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद दिल्ली), डॉ. बाहुबली जैन इंदौर, पं. प्रद्युम्न शास्त्री जयपुर (महामंत्री प्रभावना जनकल्याण परिषद), डॉ.राजेश शास्त्री ललितपुर, मनीष विद्यार्थी सागर, पंडित प्रिंस शास्त्री लखनऊ, संदीपकान्त जैन लखनऊ, अखिलेश शास्त्री आदि विद्वद्जन सम्मिलित हुए।

कृतियों का हुआ विमोचन -

संगोष्ठी में महत्वपूर्ण कृतियों का विमोचन हुआ जिसमें मुनि श्री सुप्रभ सागर जी महाराज की प्रवचन कृति मेरी ...मेरी भावना, 2023 में उज्जैन में मुनिश्री के सान्निध्य में संपन्न सुरभित मैत्री अनुशीलन राष्ट्रीय विद्वत् संगोष्ठी की स्मारिका, जैन गजट साप्ताहिक लखनऊ का नया अंक व अहिंसा करुणा का गणाचार्य श्री विरागसागर विनयांजलि विशेषांक का विमोचन विद्वानों द्वारा किया गया।

आयोजन समिति द्वारा विद्वानों का सम्मान -

आयोजन समिति द्वारा विद्वानों का भव्य सम्मान चातुर्मास समिति के अध्यक्ष हंसराज जैन, कार्याध्यक्ष जागेश जैन, संयोजक संजीव जैन, श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर सआदतगंज लखनऊ के अध्यक्ष वीरेन्द्र गंगवाल, महामंत्री प्रमोद गंगवाल, मंत्री मनोज छाबड़ा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष विमलचंद बाकलीवाल, धर्मशाला प्रबंधक विकास जैन काला, कोषाध्यक्ष किशन गंगवाल, रितेश रावका, कमल रावका, नीरज जैन, विनय जैन, चित्रा जैन आदि ने किया। आयोजन समिति को संगोष्ठी में प्रस्तुत आलेख भेंट किए गए जो पुस्तिकाकर में प्रकाशित होंगे।

डॉ. सुनील संचय को उत्कर्ष समूह ने किया सम्मानित -

इस मौके पर 20 अक्टूबर को उत्कर्ष समूह भारत ने वर्ष 2024 का आचार्य श्री विशुद्धसागर पुरस्कार एवं प्रभावना पुरुषोत्तम उपाधि से डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर को उत्कर्ष समूह के अध्यक्ष रवींद्र गहाणकर अमरावती, संयोजक अरविंद बुखारिया उज्जैन आदि तथा विद्वानों ने समारोह पूर्वक अलंकृत किया। इस मौके पर श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज ने कहा कि मेरी भावना में हमारा अपना जीवन्त जीवनशास्त्र है। जीवन की आचारसंहिता है। इसमें केवल जैनदर्शन का सार नहीं है, अपितु दुनियाँ के सभी धर्मो का नवनीत समाहित है। यह रचना भाईचारे और साम्प्रदायिक सहिष्णुता का पैगाम है। राष्ट्रीय चरित्र का शिलालेख है। मेरी भावना देश के विकास की इकाई के रूप में गाया गया एक मंगलगान है। यह जातिधर्मध्देशध्समाज और भाषा की सीमा से उन्मुक्त, मनुष्य की मनुष्यता का गौरवगान है। इस छोटी सी रचना पर मेरी... मेरी भावना देशना कृति पर देश के मूर्धन्य मनीषियों ने अपने शोधालेख प्रस्तुत कर आलोडन-विलोडन किया। विद्वानों का जैन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में अविस्मरणीय योगदान है। मुनिश्री ने एक-एक शब्द के रहस्य को उद्घाटित किया रू विद्वानों ने कहा कि पंडित जुगल किशोर जी मुख्तार की अद्भुत, अनुपम, अनूठी, अमर रचना 'मेरी भावना' पर परम पूज्य श्रमण मुनि श्री सुप्रभ सागर जी महाराज ने अपनी प्रवचन श्रृंखला के माध्यम से मेरी... मेरी भावना के रूप में प्रस्तुत किया है। मुनिश्री ने एक-एक शब्द के रहस्य को जहाँ उद्घाटित किया है वहीं अनेक उदाहरणों, श्लोकों, गाथाओं, शास्त्र उदाहरणों, मुक्तक और सूक्ति वाक्यों के माध्यम से इस कृति को जन-जन के लिए पठनीय बना दिया है।

संगोष्ठी में हुए चार सत्र -

संगोष्ठी के चार सत्रों की अध्यक्षता क्रमशः डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत, डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, ब्र.जयकुमार निशान्त टीकमगढ़, प्रोफेसर अशोक कुमार जैन वाराणसी व सत्र संचालन संयोजक डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर, प्रोफेसर अनेकांत जैन दिल्ली, श्री राजेंद्र जैन महावीर सनावद, पंडित विनोद जैन रजवांस ने किया। चार सत्रों में 18 आलेख प्रस्तुत किए गए।

आचार्य श्री विशुद्धसागर पुरस्कार से सम्मानित हुए युवा मनीषी डॉ. सुनील जैन 'संचय'

उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ में 'प्रभावना पुरुषोत्तम' की उपाधि से किया गया अलंकृत

लखनऊ/जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने हेतु संकल्पित उत्कर्ष समूह भारत द्वारा प्रतिवर्ष समाजसेवा, श्रुत संवर्द्धन, देव-शास्त्र-गुरु के प्रति समर्पण, साहित्यिक अवदान, प्रभावना आदि के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान देने वाले किसी एक विशिष्ट व्यक्तित्व को संयम पुरुषोत्तम श्रमणाचार्य श्री विशुद्धसागर पुरस्कार प्रभावना पुरुषोत्तम उपाधि के साथ प्रदान किया जाता है। वर्ष 2024 का यह पुरस्कार व उपाधि उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ में श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज,श्रमण मुनि श्री प्रणतसागर जी महाराज के सान्निध्य में युवा मनीषी, अनेक कृतियों के संपादक, निरंतर लेखनकार्य में संलग्न, अनेक सामाजिक-धार्मिक संस्थाओं में विभिन्न महत्वपूर्ण पदों पर आसीन होकर समाजसेवा में संलग्न डॉ. सुनील जैन संचय ललितपुर को उनके उल्लेखनीय कार्यो के लिए समारोह पूर्वक 20 अक्टूबर रविवार को प्रदान किया गया। साथ ही 'प्रभावना पुरुषोत्तम' उपाधि से भी अलंकृत किया गया। उत्कर्ष समूह द्वारा डॉ.सुनील संचय को तिलक, माला, श्रीफल, साहित्य, पुरस्कार प्रशस्ति पत्र, उपाधि प्रशस्ति पत्र, माला, शाल, पगड़ी, पुरस्कार राशि, अंग वस्त्र आदि के साथ भव्य रूप से सम्मानित किया गया। संचालन उत्कर्ष समूह के निदेशक राजेन्द्र जैन महावीर सनावद ने किया। सम्मान समारोह के पूर्व विदुषी जैन लखनऊ ने मंगलगीत

प्रस्तुत किया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार उत्कर्ष समूह के अध्यक्ष रविन्द्र जैन गहाणकर अमरावती, महाराष्ट्र, संयोजक अरविंद बुखारिया उज्जैन, संजीव जैन लखनऊ, उपाध्यक्ष जागेश जैन लखनऊ आदि उत्कर्ष समूह के पदाधिकारियों के साथ ही देश के मूर्धन्य मनीषियों डॉ. श्रेयांस कुमार जैन बड़ौत अध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, डॉ. जयकुमार जैन मुजफ्फरनगर, अधिष्ठाता श्रमण संस्कृति संस्थान सांगानेर, जयपुर, प्रोफेसर श्रीयांस सिंघई जयपुर राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय जयपुर सेवानिवृत्त प्रोफेसर, ब्रह्मचारी जयकुमार निशांत टीकमगढ़ महामंत्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, प्रो. अशोक कुमार जैन वाराणसी अध्यक्ष-अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद, प्रो अभय कुमार जी जैन लखनऊ, उपाध्यक्ष उत्तर प्रदेश शोध संस्थान लखनऊ, पंडित विनोद जैन रजवांस उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, ब्र.डॉ. अनिल जैन प्राचार्य आचार्य संस्कृत महाविद्यालय सांगानेर जयपुर,डॉ. विमल जैन जयपुर, प्रो. अनेकांत जैन दिल्ली लाल बहादुर संस्कृत विश्विद्यालय दिल्ली, पंडित पवन जैन दीवान सागर उपाध्यक्ष अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, राजेन्द्र जैन महावीर सनावद निर्देशक उत्कर्ष समूह, डॉ. पंकज जैन इंदौर, डॉ. आनंद जैन वाराणसी ,डॉ. सोनल कुमार जैन, संयुक्त मंत्री अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद दिल्ली, डॉ.बाहुबली जैन इंदौर,पं. प्रद्युम्न शास्त्री जयपुर, डॉ. राजेश शास्त्री ललितपुर,मनीष विद्यार्थी, पंडित प्रिंस शास्त्री लखनऊ आदि ने अपने कर कमलों से प्रदान किया। इस दौरान उत्कर्ष समूह भारत के अध्यक्ष रवींद्र गहाणकर अमरावती ने बताया कि उत्कर्ष समूह भारत, श्रमण मुनि श्री सुप्रभसागर जी महाराज की प्रेरणा से स्थापित ऐसा समूह है जो जीवन मूल्यों को प्रतिष्ठापित करने हेतु संकल्पित है। इस मौके पर मुनि श्री 108 सुप्रभसागर महाराज ने कहा कि पुरस्कार,सम्मान मिलने से सम्मानित व्यक्तित्व को और अधिक ऊर्जा प्राप्त होती। विशिष्ट व्यक्तित्व- प्रतिभा का सम्मान करना एक अच्छी परंपरा है। इससे दूसरों को प्रेरणा मिलती है तो वहीं समाज को टेलेंट मिलता है। जो पुरस्कृत होते हैं उनका उत्साहवर्धन होता है तथा अन्य लोगों को प्रेरणा मिलती है। पुरस्कृत व्यक्तित्व को मेरा मंगल आशीर्वाद है कि वे इसी प्रकार से प्रभावना करते रहें। उत्कर्ष समूह समाजसेवा के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। इस उपलब्धि पर अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन शास्त्री परिषद, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन विद्वत् परिषद, भारतवर्षीय तीर्थक्षेत्र कमेटी, उत्तर प्रदेश-उत्तरांचल तीर्थक्षेत्र कमेटी, प्रभावना जनकल्याण परिषद, दिगम्बर जैन पंचायत ललितपुर, प्रागैतिहासिक तीर्थक्षेत्र नवागढ़, करुणा इंटरनेशनल, दिगम्बर जैन महासभा, वर्णी विकास संस्थान समिति, अखिल भारत जैन पत्रकार महासंघ, श्री महावीर दिगम्बर जैन संस्कृत विद्यालय एवं श्री गणेश वर्णी जैन छात्रावास साढूमल, चिंतन समूह आदि संस्थाओं ने हार्दिक बधाई व शुभकामनाएं प्रेषित कर उज्ज्वल भविष्य की मङ्गल कामना की है।

उल्लेखनीय है कि 2022 में यह प्रतिष्ठित पुरस्कार श्री प्रमोद जैन वारदाना सागर को विदिशा में, वर्ष 2023 का पुरस्कार श्री तेज कुमार विनायका को उज्जैन में मुनि श्री के सान्निध्य में प्रदान किया था। अनुपमा राजेन्द्र जैन महावीर, लखनऊ में युवा मनीषी डॉ. सुनील संचय को उत्कर्ष समूह भारत द्वारा पुरस्कार व उपाधि प्रदान करते अतिथि व पदाधिकारी तथा विद्वान।

सर्वस्व शिक्षा को समर्पित दिव्य आत्मा अनन्त में विलीन - डॉ. अजय कुमार तिवारी

विद्याभारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के महामंत्री और शिक्षा बचाओ आन्दोलन के संयोजक अमर कीर्ती माननीय दीनानाथ बत्रा जी आजीवन सर्वस्व शिक्षा में समर्पित करते परमपिता परमात्मा के दिव्य ज्योति में समाहित हो गये, उन्हें विनम्र श्रद्धांजली देते हुये शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के महाकौशल प्रान्त अध्यक्ष डॉ. अजय कुमार तिवारी जी ने शोक सभा में बताया बत्रा जी शिक्षा में भारतीयता स्थापित करने के संकल्प को एक देशव्यापी आंदोलन किया और चरित्र निर्माण एवं व्यक्तित्व के समग्र विकास के पाठ्यक्रम की रचना की, डॉ. तिवारी ने कहा बत्रा जी भारतीय शिक्षा में सुधार और संस्कार, मूल्य शिक्षा प्रेरणादायक शिक्षाविद मा. बत्रा जी ने अनगिनत शैक्षिक समिति का मार्गदर्शन किया, आपके ही प्रयास से भारतीय संस्कति और शिक्षा में भारतीय संस्कृति और शिक्षा में भारतीय मूल्यों के समावेश पर सदैव प्रयास किया, आज राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सभी विषय समाहित किया गया है। हम उनको सदैव अपने शिक्षा का आधार बनाकर जीवन्त रखेंगे, आपने अपने सभी शैक्षणिक संस्थानों में बत्रा शैक्षिक पीठ ष बनाने का संकल्प लिया साथ ही विद्याभारती के प्राचार्य, प्रधानाचार्य जी ने कहा बत्रा जी की एक भारतीय संस्कृति की ज्योति विषय पर रखेंगे। साथ ही एक कक्ष मान. दीनानाथ बत्रा जी के नाम से होगा, इस शोक सभा में गौर विश्व विद्यालय के मान. विवेक जायसवाल, मान. शशी जी ने भी अपने वक्तव्य अश्रुपूरित शब्दों के साथ किया, राष्ट्रीय अधिकारी मान. आयुष गुप्ता जी ने बत्रा जी के द्वारा किये गये प्रयास अर्थात पाठ्यक्रम में पांच मूलभूत विषयों के साथ संस्कृत को भी महत्वपूर्ण स्थान दिया क्योंकि बत्रा जी कहते थे संस्कृत पढ़ कर हम प्राचीन निधि को प्राप्त करते हैं। आपका कहना था प्राचीन ज्ञान विज्ञान जीवन मूल्यों की पहचान तथा सांस्कृति धरोहर का हस्तान्तरण करने के लिये संस्कृति भाषा का ज्ञान आवश्यक है। स्वामी विवेकानंद विश्वविद्यालय के डॉ. सुखदेव वाजपेयी जी ने कहा बत्रा जी सदैव मातृभाषा को आवश्यक मानते थे क्योंकि बत्रा जी के विचार से शिक्षा का उचित परिणाम तभी मिलेगा जब शिक्षा मातृभाषा में होगी। क्योंकि व्यवहार और सिद्धांत में असुन्तलन अपेक्षित नहीं है।

आधुनिकता और प्राचीनता का समन्वय ही सही शिक्षा है। इसी तरह भिन्न उदाहरणों से सभी ने बत्रा जी को याद किया। श्री आदित्य प्रखर तिवारी जी ने अपना संस्मरण और अनुभव सांझा किया जो उन्हें बत्रा जी के साथ स्नेह से मिला था। इसी अवसर पर डॉ. संजय सिह, डॉ. सतीश जी, डॉ. उमेश मिश्र, डॉ. आशीष यादव, डॉ. विश्वकर्मा, श्री प्रदीप चौरसिया, श्री गोविंद सिंह, श्री प्रमोद उपाध्याय आदि सभी उपस्थित रहे पुष्पांजली के उपरान्त शोकसभा समाप्त हुई ।

विद्यार्थियों के लिये तम्बाकू धूमपान धीमा जहर

तम्बाकू भी समाज द्वारा मान्य नशा है यद्यपि यह हानिकारक पदार्थ है परन्तु यह धीमे विष की भांति है। तम्बाकू से उत्पन्न रोगों की चिकित्सा पर खर्च धन उसकी बिक्री से प्राप्त राजस्व से कहीं अधिक है। कैन्सर का कारण - अनेक अन्वेषण अध्ययनों से पता चला है कि तम्बाकू में करीब 400 ऐसे रसायन होते हैं जो व्यक्ति के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। इनमें से करीब 48 पदार्थ कैन्सर उत्पन्न करने वाले है। औष्ठ, जिव्हा ग्रसनी आदि का कैन्सर धूम्रपान की गर्मी का सीधा प्रभाव है। धूम्रपान करने वालों में फेफड़ों का कैन्सर होता है। तम्बाकू का कैन्सर करने वाले अवगुण इसे अन्य नशे जैसा हानिकारक बना देता है।

जीवन शक्ति का ह्रास हो जाता, यद्यपि तम्बाकू सही अर्थो में शारीरिक निर्भरता नहीं करता तो भी इसकी लतसे छुटकारा पाना सरल नहीं है। यह व्यक्ति की जीवन शक्ति को धीरे-धीरे क्षीण करता हुआ अन्ततः मृत्यु के द्वार पर ले जाता है।

गर्भस्थ शिशु पर दुष्प्रभाव- अनेक खोजों से यह स्पष्ट सिद्ध हो चुका है कि यदि गर्भवती स्त्री धूमपान करती है तो गर्भस्थ शिशु पर हानिकारक प्रभाव पड़ते हैं। तम्बाकू माता एवं गर्भस्थ शिशु के बीच की नाल को पार कर अपना जहरीला प्रभाव शिशु के कोमल अंगों पर डाल देता है। इसलिए शिशु के जीवन एवं स्वास्थ्य के लिए धूमपान नहीं करना चाहिए। व्यसनी के सम्पर्क में आने वाले को हानि होती है साथ ही तम्बाकू रूपी विष सेवन करने वाला केवल अपनी हानि ही नहीं करता अपितु जो धुंआ वह छोड़ता है वह उसके निकट बैठे धूमपान न करने वाले व्यक्तियों के फेफड़ों में चला जाता है। धूमपान न करने वाले व्यक्तियों को भी इस प्रकार का धुंआ 25 प्रतिशत हानि करता है। आपको जानना चाहिए कि आपके पास बैठा कोई व्यक्ति यदि धूमपान कर रहा है तो उसका 25 प्रतिशत दुष्प्रभाव आप पर भी पड़ रहा है। यदि कोई व्यक्ति तम्बाकू का सेवन त्याग देता है तो इसके हानिकारक प्रभाव धीरे-धीरे समाप्त हो जाते हैं तथा 2-4 वर्ष के पश्चात फेफड़ों का कैन्सर होने का खतरा धूमपान न करने वाले व्यक्ति क समान ही होता है।

तहसील प्रेस क्लब मध्यप्रदेश रजि. द्वारा आयोजित
ज्ञानोदय प्रेस अवार्ड 2016 से अब तक सम्मानिक प्रतिभागी

नगर गौरव– 2016– डॉ. लक्ष्मीकांत कटारे (जिला चिकित्सा अधिकारी, सागर), सिं. हेमपाल सिंघई (डी.एस.पी. दमोह) डॉ. जावेद अख्तर (पूर्व प्राचार्य भोपाल), श्री गोविन्द सिंह ठाकुर (टी.सी. रेल्वे जबलपुर), श्री बैजनाथ चौरसिया (पूर्व प्रधानाध्यापक), श्री रामसिंह अहिरवार (आचार्य बिजावर)

नगर गौरव– 2017– श्री जे.पी. अग्निहोत्री (रिटा. शिक्षक), डॉ. यू.एस. पाण्डे (बी.एस.ओ.), श्री स्वामी प्रसाद सोनी (रिटा. शिक्षक शाहगढ़), श्री पदम सेठ (लेखापाल नगर पंचायत शाहगढ़), ॐ सांई राम मंदिर समिति (शाहगढ़)

नगर गौरव– 2018–19– श्री दामोदर सेठ (समाजसेवी), श्री ओ.पी. दुबे (रिटा. शिक्षक), डॉ. अमित असाटी (मेडीकल आफीसर शाहगढ़), श्री शंकर सोनी (कलाकार), आचार्य विद्यासागर दयोदय गौशाला समिति, शाहगढ़

नगर गौरव– 2020–21– श्री सत्यनारायण असाटी (पूर्व प्राचार्य), श्री शैलेन्द्र सिंह बुन्देला (सेल टैक्स कमिश्नर इंदौर), कु. रिया जैन (सहायक संचालक अल्पसंख्यक एवं पिछड़ा वर्ग), कु. वीणा विश्वकर्मा (एस.आई. बण्डा)

नगर गौरव– 2022–23– श्री राजेन्द्र जैन (भोपाल), सहायक लेखाधिकारी, प्रो.पी.एल. प्रजापति (सागर), सहायक प्राध्यापक

पत्रकार श्री 2016 से अब सम्मानित पत्रकारगण

पत्रकार श्री 2016– श्री राजेश रागी, बक्सवाहा, श्री सूर्य कुमार दुबे, बण्डा, श्री देव सांधेलिया, हीरापुर, श्री काशीराम आठिया, मड़देवरा, श्री ब्रजेश ताम्रकार, शाहगढ़

पत्रकार श्री 2017– श्री देव कुमार यादव, बण्डा, श्री बृजेश गुप्ता, शाहगढ़, श्री सुनील संचय, ललितपुर (उ.प्र.)

पत्रकार श्री 2018– पं. श्री सुनील तिवारी, सागर न्यूज, श्री पवन जैन, नई दुनिया, इंदौर

पत्रकार श्री 2019– श्री संदीप जैन, शाहगढ़, श्री प्रताप राजा, शाहगढ़, श्री रवि सेन, बण्डा

पत्रकार श्री 2022– श्री राजेन्द्र महावीर सनावत, श्री रामगोपाल गोस्वामी, बण्डा, श्री पुनीत जैन, शाहगढ़, श्री शंभूप्रसाद असाटी, हीरापुर

पत्रकार श्री 2023– राज पटैरिया, ब्यूरोचीफ हरिभूमि छतरपुर, ऋषभ जैन, रिटा.सहायक संचालक, जनसंपर्क भोपाल, प्रमोद राजपूत, दूरदर्शन संवाददाता, पं. सौरभ अरेले, संवाददाता जनता सेवा एक्सप्रेस न्यूज

अन्य सम्मान- वरिष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता सम्मान से गुलाबचंद गोलन, वरिष्ठ साहित्यकार सम्मान से किशोरीलाल गुप्ता
वरिष्ठ शिक्षक सम्मान से पं. जगदीश प्रसाद शुक्ला

क्षेत्र गौरव – 2024

मा. वीरेन्द्र सिंह लंबरदार
विधायक बण्डा

श्री अरविन्द्र जैन
जिला शिक्षाधिकारी सागर

श्रीमति निधि जैन
प्रबंध संपादक दैनिक आचरण

पत्रकार श्री 2024

डॉ. योगेशदत्त तिवारी
प्रबंध संपादक देशबंधु

शिवा पुरोहित
सागर टी.वी. न्यूज, आज तक